21वीं सदी के दूसरे दशक के हिन्दी उपन्यासों में संवेदना का नया धरातल (2015-2022 तक)

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

डॉ० आनन्द प्रकाश गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

अनुसंधायिका

अनुराधा कुमारी
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा
पैट क्रमांक- 22090055

21वीं सदी के दूसरे दशक के हिन्दी उपन्यासों में संवेदना का नया धरातल (2015-2022 तक)

- **भूमिका:-**

21 वीं शताब्दी का कालखंड हिन्दी साहित्य सृजन के लिए बड़ा ही सांस्कृतिक संक्रमण का कालखंड रहा है। इस अवधि का साहित्य पूरी तरह सम-सामयिक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक मूल्यों का साहित्य है। 1991 में सोवियत संघ के विघटन और पूरे विश्व-क्षितिज पर पूंजीवादी सभ्यता का एकतरफा प्रभाव विश्व व्यापार संगठन की स्थापना से वैश्विक परिदृश्य पूरी तरह बदल गया था। राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ढाँचा का नियंत्रण नयी आर्थिक शक्ति के पास केन्द्रित हो गया। नये वैश्विक परिवेश के प्रभाव के कारण आर्थिक शक्तियाँ ही विश्व की संस्कृतियों को नियंत्रित करने लग गयी। जैसा कि सर्वविदित तथ्य है 21 वीं सदी का भारत वैश्विक-क्षितिज पर उभरता हुआ बाजार बन गया है। जहाँ अधिकांश व्यापारिक कम्पनियों के अधिकांश प्रोडक्ट का खपत हो सकता है। ऐसी स्थिति में नयी व्यापारिक कम्पनियों के आर्थिक नियमों ने सर्वप्रथम हमारी साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन-धारा को प्रभावित किया है। हिन्दी साहित्य खासकर उपन्यासों में मूल्य क्षरण और संस्कृति-क्षरण के चिह्न का प्रभाव इस कालखंड के उपन्यासों पर साफ-साफ देखा जा सकता है। नव सम्राज्यवादी और नव औपनिवेशिक साम्राज्यवाद और भूमंडलीकरण का प्रभाव इन उपन्यासों के मुख्य विषय रहे हैं। लेकिन 2014 के बाद भारत के स्थितियाँ में थोड़ा बदलाव दिखायी पड़ने लगता है। भारतीय राजनीति के क्षेत्र में राष्ट्रवाद की नयी संकल्पना ने पूर्व के साहित्य-सृजन की परम्परा में बदलाव के संकेत दिखने लगे हैं। 2015 से 2022 तक प्रकाशित हिन्दी उपन्यासों का कथ्य, कलेवर और संवेदना का धरातल अलग-अलग है जो भूमण्डलीकरण

बाजारवाद आवारा पूँजीतंत्र के प्रभाव से मुक्त है। इन उपन्यासों की संवेदना में कृषक है, मजदूर, शोषित और उपेक्षित वर्ग है जो राष्ट्र की मुख्यधारा में सम्मिलत होने के लिए संघर्षरत दिखता है। इस कालखंड के उपन्यासो में संजीव रचित 'फाँस' (2015 ई०), शाज़ी ज़मा का 'अकबर' (2016 ई०), चित्रा मुद्गल का 'पोस्ट बॉक्स न० 203 नाला सोपारा' (2016 ई०) ममता कालिया का 'कल्चर वल्चर' (2017 ई०), सुजाता चौधरी का 'सौ साल पहले' (2017 ई०), मृणाल पाण्डेय का 'सहेला रे' (2017 ई०), संजय कुंदन का 'तीन ताल' (2018 ई०), राजेन्द्र दानी का 'जो दिखता नहीं' (2018 ई०), मधु कांकरिया का 'हम यहाँ थे' (2018 ई०), चंद्ररेखा ढडवाल का 'समय मेरे अनुरुप हुआ' (2019 ई०), अब्दुल बिस्मिल्लाह का 'कुठाँव' (2019 ई०), महेश कटारे का 'कालीधारा (2019 ई०), तरुण भटनागर का 'राजा जंगल और कालाचाँद' (2019 ई०) हृषीकेश सुलभ का 'अग्निलीक' (2019 ई०), वन्दना राग का 'विसात पर जुगनु' (2021 ई०), अनामिका का 'आईनासाज़' (2021 ई०), अलका सरावगी का 'कुलभूषण का नाम दर्ज' (2021 ई०) इत्यादि।

वर्ष 2015 से हिन्दी उपन्यासों के संवेदनात्मक धरातल में काफी बदलाव दिखायी पड़ता है। संजीव रचित 'फाँस' उपन्यास में भूमंडलीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति से इतर महाराष्ट्र के किसानों की दयनीय अवस्था का चित्र प्रस्तुत करता है। विदर्भ के किसान लगातार आत्महत्या कर रहे थे। इसका मुख्य कारण था इस क्षेत्र में सफेद सोना कही जाने वाली फसल कपास का सर्वाधिक उत्पादन तो हो रहा था लेकिन किसानों को लागत मूल्य भी प्राप्त नहीं हो रहे थे। इसी तरह 2016 में दो प्रमुख उपन्यास 'अकबर' तथा 'पोस्ट बाक्स नं 203 नाला सोपारा' प्रकाशित हुआ । दोनो उपन्यासों की कथा वस्तु से कोई सम्बन्ध नहीं है। एक इतिहास के उस कालखंड को गहराई से उकेरता, है जिसमें एक अपराजेय बादशाह तमाम सफलताओं के बावजूद 'दीन' का नया रूप देने के लिए बेचैन था। शाज़ी ज़मा का यह प्रयास इतिहास के पन्नों से अलग है जो संवेदना के स्तर पर लोक जीवन को संस्पर्श कर रहा है। इसी वर्ष चित्रा मुद्गल का

‘पोस्ट बॉक्स न 203-नाला सोपारा’ तृतीय लिंगी समाज के प्रति हमारे अपने समाज की घृणा और उपेक्षा को मां के संवेदनशील मन से देखने का नव्य प्रयास है। वर्ष 2017 में चार उपन्यास प्रकाशित हुए ‘सौ साल पहले’ वस्तुतः चम्पारण सत्याग्रह पर आधारित उपन्यास है। सुजाता चौधरी द्वारा रचित इस उपन्यास में 21 वीं शताब्दी में गाँधीवादी मूल्यों की स्थापना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण प्रयास है। इसी तरह ममता कालिया रचित ‘कल्चर वल्चर’, मृणाल पाण्डेय का ‘सहेला रे’ तथा संजय कुंदन का ‘तीन ताल’ प्रमुख है। ममता कालिया ने ‘कल्चर वल्चर’ उपन्यास में भारतीय भाषा परिषद कोलकता की कार्य पद्धति को केन्द्र में रखकर लिखा है। ‘सहेला रे’ उपन्यास में मृणाल पाण्डेय ने 1857 की क्रांति के पश्चात मुजरे को गैर कानूनी करार देने के पश्चात तवायफों के सम्भ्रांत कोठे उजड़ने की मार्मिक गाथा को पूरी सजीवता के साथ उद्घाटित किया है।

वर्ष 2015 में राजेन्द्र दानी रचित ‘जो दिखता नहीं तथा मधु कांकरिया के उपन्यास ‘हम यहाँ थे’ का प्रकाशन हुआ। राजेन्द्र दानी ने इस उपन्यास में मनुष्य के संघर्ष के पश्चात वार्द्धक्य अवस्था में अकेलेपन की त्रासदी को बड़ी ही मार्मिकता के साथ उकेरा है। मधु कांकरिया ने ‘हम यहाँ थे’ उपन्यास में मारवाड़ी समाज की रूढ़िवादित्ता पर खुलकर प्रहार किया है।

वर्ष 2019 में चन्द्ररेखा ढडवाल रचित ‘समय मेरे अनुरूप हुआ’, अब्दुल विस्मिल्लाह का ‘कुठाँव’, महेश कटारे का ‘कालीधार’ तथा हृषीकेश सुलभ का ‘अग्निलीक’ उपन्यास प्रकाशित हुआ। इन सभी उपन्यासों का कथ्य और सरंचनात्मक शिल्प में काफी अंतर है।

वर्ष 2020 में प्रकाशित वन्दना राग का ‘विसात पर जुगनू’ उपन्यास में 1840-1910 तक के कालखंड की तीन ऐसी स्त्रियों की कथा-व्यथा है जो साधारण परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी अपने साहस और शौर्य से इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर अपना नाम दर्ज किया है।

वर्ष 2022 में अनामिका रचित ‘आईनासाज़’ उपन्यास में अमीर खुसरों को इतिहास के पन्नों से इतर हटकर नयी कल्पना का आगाज दिखायी पड़ता है।

इस तरह स्पष्ट है कि वर्ष 2015 से लेकर वर्ष 2022 तक के उपन्यासों का कथ्य नयी संवेदना और लोकजीवन के नये कलेवर से अनुस्यूत है। ऐसी स्थिति में इस काल खंड के उपन्यासों के संवेदनात्मक धरातल अनुसंधान के लिए नये द्वार का उद्घाटन करता है।

- **शोध विषय की आवश्यकता:-**

21वीं शताब्दी का कालखंड हिन्दी उपन्यास और कथा-साहित्य के लिए मूल्यों के संक्रमण और सांस्कृतिक क्षरण का कालखंड है। लेकिन 21वीं सदी का दूसरा दशक एवं तीसरे दशक का आरंभ हिन्दी उपन्यास के लिए नयी जमीन तैयार करता हुआ दिखायी देता है। आवारा पूँजीवाद, नव्य साम्राज्यवाद वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण के आवर्त से मुक्त होकर हिन्दी उपन्यास के कथ्य में संवेदना का नया धरातल दस्तक दे रहा है। वर्ष 2015 से 2022 तक प्रकाशित उपन्यासों में कथ्य और शिल्प की दृष्टि से सांस्कृतिक मूल्यों के सम्बर्धन के साथ ही साथ इतिहास, संस्कृति और लोकजीवन को संवेदना की दृष्टि से देखने का नया प्रयास है। इस कालखंड में जो उपन्यास प्रकाशित हुए है उनमें इतिहास संस्कृति समाज और लोक जीवन का गहरा संस्पर्श अन्तर्निहित है। 'फाँस' (2015) में प्रकाशित उपन्यास में भारतीय किसानों की दयनीय जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। महाराष्ट्र का विदर्भ कपास की खेती के लिए ख्यात है। इतना ही नहीं इस क्षेत्र में कपास का सर्वाधिक उत्पादन तो होता है लेकिन उसका लागत मूल्य कृषकों को प्राप्त नहीं होने के कारण वहाँ के किसान कर्ज के दलदल में लगातार धँसते जा रहे हैं और परिणामस्वरुप कर्ज के दबे बोझ के कारण हजारो किसान प्रतिवर्ष आत्महत्या करने को मजबूर होते हैं। किसानों की आत्महत्या पर हिन्दी में यह पहला उपन्यास है जिसमें कृषकों की दारुण अवस्था का मार्मिक चित्र अंकित है। इसी तरह 'अकबर' (2016) और 'पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा' (2016) उपन्यास में भी संवेदना का नया धरातल अनुस्यूत है। शाज़ी ज़माँ ने इतिहास प्रसिद्ध मुगल कालीन अकबर के चरित्र में उन सारे

तथ्यों को समाहित करने की कोशिश की है जो इतिहास के पन्नों में नहीं है। वस्तुतः यह सच है कि इस्लामी सभ्यता संस्कृति में अकबर सर्वाधिक सहिष्णु और संवेदन शील शासक था। लेखक ने अकबर की संवेदन शीलता का नये रूप का उद्‌घाटन इस उपन्यास में किया है। इसी तरह चित्रा मुद्गल ने 'पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा' में तृतीय लिंगी समाज के प्रति उपेक्षा और तिरस्कार की भावना को माँ के संवेदनशील मन की आँखों से देखने का प्रयास है। इस उपन्यास में माँ-बेटे के बीच पत्रों के माध्यम से परस्पर संवाद की भावना और स्नेहिल संस्पर्श के द्वारा मानवीय संवेदना के कैनवास में उतारने की कोशिश की है। सम्पूर्ण उपन्यास में कई प्रश्न अनुत्तरित रह जाते हैं जिसमें शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों को माँ-बाप पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ पल्लवन पोषण करते है जबकि लिंग के स्तर पर दोष होने के कारण जन्म देने वाले माता-पिता अपने बच्चों को ऐसे लोगों को सौंप देते है जो सामाजिक स्तर पर जीवन पर्यन्त उपेक्षित और घृणा के पात्र बन जाते हैं। पूरे उपन्यास में संवेदनात्मक रूप से ऐसे प्रश्नों को उठाया जाता है जो सम्पूर्ण मानव- जाति को गहन-संवेदना के गह्वर में जाने के लिए विवश होना पड़ता है।

21वीं शताब्दी के दूसरे दशक में गांधीवादी मूल्यों और सिद्धांतो के प्रति नकारात्मक भाव-बोध देखने को मिल रहा है। जिस गाँधी ने सत्याग्रह के बल पर औपनिवेशिक संस्कृति को भारतवर्ष से मुक्त किया था वह गाँधी इस कालखंड में कहीं न कहीं भुलाये जा रहे हैं। सुजाता चौधरी ने 'सौ साल पहले' (2017) उपन्यास लिखकर चम्पारण सत्याग्रह की अस्मिता और संघर्ष को पुनः स्मृत कराने का प्रयास किया है। उपन्यासकार ने चम्पारण आन्दोलन और उसके नायक राजकुमार शुक्ल के अवदान को व्यापक स्तर पर देखने का प्रयास किया गया है। उपन्यास के अन्तर्गत गाँधी और राजकुमार शुक्ल दो नायको को एक धरातल पर लाकर उस ऐतिहासिक संघर्ष के शुरुआत का बड़ा ही कथात्मक चित्र उपस्थित है। कहने को तो आज गाँधीवादी मूल्यों में आस्था रखनेवाले लोगों की संख्या बढ़ी है लेकिन आज गाँधी जी के दर्शन और उनके सत्याग्रह को राजनीति के चश्में से अपने फायदे के लिए कर रहे हैं। गाँधी जी की स्पष्ट

मान्यता थी कि– मुझे मेरे लिखे और कहे में नहीं बल्कि मेरे द्वारा किये गए कामों के द्वारा पहचाना जाना चाहिए। स्पष्ट है कि 1917 का चम्पारण सत्याग्रह का ऐतिहासिक महत्त्व है। 2017 में ही प्रकाशित उपन्यास ममता कालिया का 'कल्चर-वल्चर', मृणाल पाण्डेय का 'सहेला रे' तथा संजय कुंदन का 'तीन ताल' संवेदना और शिल्प के धरातल पर नया प्रयोग है। 'कल्चर-वल्चर' उपन्यास में कथ्य की पृष्ठभूमि कोलकाता का भारतीय भाषा परिषद है, जिसमें लेखिका भारतीय भाषा परिषद् में कार्य करने के अपने यथार्थ और कटु अनुभवों को सूक्ष्म संवेदना के तार से मानवीय क्षितिज पर प्रकंपित किया है। उन्होंने उपन्यास में यह भी स्पष्ट किया है कि परिषद में किसी के लिए भी आत्मसम्मान के साथ कार्य करना संभव नहीं है। 'सहेला रे' उपन्यास भी मानवीय संवेदना को झकझोरने वाला उपन्यास है। 1857 की क्रांति के पश्चात तवायफों के संभ्रांत कोठे उजड़ने लगे। इसके पूर्व तक तवायफ अपनी कला का प्रदर्शन कर जीविका चलाती थी। लेकिन अंग्रेजी हुकुमत द्वारा गैरकानूनी घोषित करने के कारण गायन, वादन और नृत्य शरीर की मण्डी में विकने लगे। मृणाल पाण्डे का यह उपन्यास वेश्या जीवन की मार्मिकता को उद्घाटित करनेवाला अत्यंत ही संवेदनशील उपन्यास है। संजय कुन्दन रचित 'तीन ताल' उपन्यास कॉरपोरेट जगत, मीडिया और रंगकर्मी की त्रयी को अलग-अलग कर तीनों की स्वाधीनता से संबंधित प्रश्नों को उठाया है। पूँजीवादी व्यवस्था और उसकी आर्थिक शक्ति के कारण मीडिया, रंगकर्मी और कॉरपोरेट जगत अब स्वायत रहकर कार्य नहीं कर रहे है।

वर्ष 2018 में प्रकाशित राजेन्द्र दानी का चर्चित उपन्यास 'जो दिखता नहीं और मधु कांकरिया का 'हम यहाँ थे' नये भाव-बोध को अनुप्राणित करने वाली रचना है। जो दिखता नहीं उपन्यास में परिवार का मुखिया अपने बच्चों और परिवार के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष करता है और जीवन के अंत में स्वयं को अकेला और निस्सहाय पाता है। मधु कांकरिया के उपन्यास 'हम यहाँ थे' में मारवाड़ी समाज की परम्परागत रुढ़ियों पर प्रहार कर नयी स्त्री चेतना को जाग्रत करने की कोशिश की है।

इसी तरह वर्ष 2019 में प्रकाशित उपन्यास चन्द्ररेखा ढडवाल का 'समय मेरे अनुरूप हुआ', अब्दुल विस्मिल्लाह का 'कुठाँव', महेश कटारे का 'जंगल और काला चाँद' तथा हृषीकेश सुलभ का 'अग्निलीक' प्रमुख है। ये सभी उपन्यासों के कथ्य और संवेदनाएं अलग है। इसी तरह 2020 में प्रकाशित वन्दना राग का 'विसात पर जुगनु' स्त्री चेतना की नयी परिभाषा को रखती हुई दिखायी पड़ता है। 2020 में ही अनामिका का 'आईनासाज़' भी सूफी संस्कृति को नये कलेवर में प्रस्तुत किया गया है। ऐसी स्थिति में 21वीं सदी के दूसरे दशक खासकर 2015 से लेकर 2022 तक के उपन्यासों में संवेदना का नया फलक है, नया संस्कृतिक जीवन मूल्य है, कृषक जीवन की त्रासदी को देखने का नव्य प्रयास है, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के अनुत्तरित प्रश्न है, इतिहास बोध की नयी व्याख्या है, प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न है, पूँजीवादी संस्कृति के कारण मीडिया, रंगकर्मी और कॉरपोरेट घराना का प्रभावित होना निःसंदेह सम-सामयिक चेतना को प्रतिविम्बित करता हुआ दिखायी देने वाला नग्न यथार्थ है। एतदर्थ, उपर्युक्त आयाम निःसंदेह अनुसंधान के लिए एक नये द्वार का उद्घाटन करता है। ऐसे शोध विषय की सम-सामयिक मांग और आवश्यकता है।

- ## प्रस्तावित शोध विषय का महत्त्व:-

प्रस्तावित शोध विषय 21वीं शताब्दी के दूसरे दशक के हिन्दी उपन्यास (2015-2022) में कथ्य का नया कैनवास है जिसमें समाज और संस्कृति के विविध रंग विखरे हुए है। इस कालखंड के उपन्यासों में कथ्य की एकरागता या एकरसता नहीं है। इन उपन्यासों की विशेषता यह है कि समान वर्ष में प्रकाशित होने के बावजूद उनके विषय एकदम अलग प्रकार के हैं। 'फाँस' उपन्यास में जहाँ कृषक जीवन का कारुण्यमय गाथा है, तो 'अकबर' में मानवीय जीवन का उद्दात रूप है, वहीं 'पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा' में किन्नर विमर्श है तो लेकिन सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर अनुत्तरित प्रश्नों की कड़ी

भी है जो मानवीय संवेदना को एक नयी ऊँचाई पर ले जाता है। 'सौ साल पहले' उपन्यास में चम्पारण सत्याग्रह की अनुगूँज है तो 'कल्चर-वल्चर' में प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति क्षोभ और आक्रोश प्रतिध्वनित होता है। 'सहेला रे' में वेश्या जीवन की त्रासदी है तो 'तीन ताल' में पूँजीवादी वर्चस्व से मीडिया और रंगकर्मी के खोखले आदर्शों की शृंखला है। 'जो दिखता नहीं' उपन्यास में जीवन के एकांकीपन की पीड़ा है तो 'हम यहाँ थे' में स्त्री मन में उठने वाले लहरों की मार्मिक गाथा है। अतः स्पष्ट है कि इस कालखंड के सभी उपन्यासों का कथ्य और कलेवर अलग-अलग सम-सामयिक मूल्यों से अन्वेषित हैं। ऐसी स्थिति में प्रस्तावित शोध विषय का वर्तमान संदर्भ में सर्वाधिक महत्त्व है। ऐसे विषय पर शोध से उपन्यास के पूर्व से चली आ रही धारा का न केवल परिमार्जन होगा बल्कि नये मूल्यों से अन्वेषित हो उपन्यास के धरातल पर सहज बदलाव भी संभव है। ऐसी स्थिति में प्रस्तावित शोध विषय का महत्त्व स्वयंसिद्ध है।

- ## पूर्वकृत शोध कार्य:-

21वीं शताब्दी के दूसरे दशक खासकर 2015 से लेकर 2022 तक के कालखंड में प्रकाशित उपन्यासों के संवेदनात्मक धरातल पर स्वतंत्र रूप से कोई कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है फिर भी 21वीं शताब्दी के उपन्यासों पर कुछ एक कार्य सम्पन्न हुए है जिसमें वाणी प्रकाशन से प्रकाशित 21वीं सदी के लिए आलोचिंतना, वाणी प्रकाशन से ही 'उत्तर-आधुनिकता और दलित साहित्य' 'उपन्यास की स्थिति और गति', 'हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद', 'समकालीन उपन्यास का वैचारिक पक्ष', भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित 'हिन्दी के आंचलिक उपन्यास और उपन्यासकार', वाणी प्रकाशन से ही प्रकाशित उपन्यास 'समय और संवेदना', राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास', कल्याणी शिक्षा परिषद से प्रकाशित 'स्त्री अस्मिता के प्रश्न', राजकमल प्रकाशन से ही प्रकाशित '21वीं सदी के संकट' प्रमुख है। इन विद्वानों ने उपन्यास और साहित्य सृजन के क्षेत्र में बदलते आयामों पर प्रकाश डाला है।

- **शोध का आधार ग्रंथ:-**

1. फॉस-संजीव-वाणी प्रकाशन 2015
2. अकबर-शाज़ी ज़माँ-राजकमल प्रकाशन 2016
3. पो. बॉक्स नं 203 नाला सोपारा-चित्रा मुद्गल-सामयिक प्रकाशन 2016
4. कल्चर-वल्चर-ममता कालिया-किताब घर 2017
5. सौ साल पहले-सुजाता-वाणी प्रकाशन 2017
6. सहेला रे-मृणाल पाण्डेय-राधाकृष्ण 2017
7. तीन ताल-संजय कुंदन-किताब घर-2017
8. जो दिखता नहीं-राजेन्द्र दानी-वाणी प्रकाशन
9. हम यहाँ थे- मधु कांकरिया-किताब घर-2018
10. समय मेरे अनुरूप हुआ-चन्द्ररेखा ढडवाल-अंतिका प्रकाशन 2019
11. कुठाँव-अबदुल विस्मिल्लाह-राजकमल प्रकाशन 2019
12. काली धार-महेश कटारे-अमर सत्य प्रकाशन-2019
13. राजा जंगल और कालाचाँद-तरुण भटनागर-आधार प्रकाशन-2019
14. अग्निलीक-हृषीकेश सुलभ-राजकमल प्रकाशन 2019
15. विसात पर जुगनु-बन्दना राग-राजकमल प्रकाशन 2021
16. आईनासाज़-अनामिका, राजकमल प्रकाशन 2021
17. कुलभूषण का नाम दर्ज-अलका सरावगी-वाणी प्रकाशन-2021

- ## शोध की परिकल्पना:-

प्रस्तावित शोध विषय “21वीं सदी के दूसरे दशक के हिन्दी उपन्यासों में संवेदना का नया धरातल (2015-2022 तक) के संबंध में मेरी परिकल्पना यह है कि 21 वीं सदी के दूसरे दशक में प्रकाशित उपन्यास खासकर 2015-2022 तक के कालखंडों में उपन्यास की संवेदना का नया ‘कलेवर’ सामने आया है। 2015 से 2022 तक के प्रकाशित उपन्यासों में भूमंडलीकरण, बाजारवाद एवं उत्तरआधुनिकतावाद के इतर हटकर उपन्यासकारों ने उपन्यासों का सृजन किया है।। जिसमें किसानों की आत्महत्या, गाँधीवादी मूल्यों की स्थापना, किन्नर विमर्श, स्त्री अस्मिता के नये प्रश्न एवं मानव जीवन के एकाकीपन का सुन्दर चित्र अभिव्यंजित है। इन उपन्यासों के नये भाव बोध से हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में नये मूल्यों की स्थापना तो होगी ही साथ ही साथ संवेदना के नये फलक से मानवीय संवेदना का सहज विस्तार संभव है।

- ## शोध की प्रविधि:-

प्रस्तावित शोध विषय “21वीं सदी के दूसरे दशक के हिन्दी उपन्यासों में संवेदना का नया धरातल” की प्रविधि मूल रूप से विवरणात्मक होगी। आगमन और निगमन विधियों का उपयोग किया जा सकेगा । आगमन विधि से तथ्यों का संकलन तथा निगमन विधि से तथ्यों का विश्लेषण एवं संभावित निष्कर्ष की प्राप्ति संभव है। अतिरिक्त इसके साकक्षात्कार विधि का भी उपयोग संभव है।

• प्रस्तावित शोध अध्यायों का विभाजन :

प्रस्तावित शोध प्रारूप "21वीं सदी के दूसरे दशक के हिन्दी उपन्यासों में संवेदना का नया धरातल" निम्न अध्यायों में विभाजित होगी–

प्रथम अध्याय-

1) 21 वीं शताब्दी में उपन्यास की विकास प्रक्रिया

2) 21 वीं शताब्दी के उपन्यासों का कथ्य

द्वितीय अध्याय-

1) 21 वीं शताब्दी के दूसरे दशक (2015-2022) हिन्दी उपन्यासों का परिचय

2) 21 वीं शताब्दी के दूसरे दशक के उपन्यासों का कथ्य (2015–2022)

तृतीय अध्याय-

1) 21 वीं शताब्दी के दूसरे दशक के उपन्यासों का संवेदनात्मक धरातल

2) 21 वीं शताब्दी के दूसरे दशक के उपन्यासों में भाव- बोध।

चतुर्थ अध्याय-

21 वीं शताब्दी के दूसरे दशक के हिन्दी उपन्यासों में संवेदना के विविध आयाम

पंचम अध्याय-

21 वीं शताब्दी के दूसरे दशक के उपन्यासों की भाषा और शिल्प

पष्ठ अध्याय-

- उपसंहार
- शोध के निष्कर्ष और मौलिक मान्यताएँ
- प्रस्तुत शोध का महत्त्व

परिशिष्ट-

संदर्भ ग्रन्थों की सूची

- **प्रस्तावित संदर्भ ग्रन्थों की सूची:-**

1) सच्चिदानंद सिन्हा– भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007

2) संपादक इन्द्रनाथ मदान-हिन्दी उपन्यास: पहचान और परख, लिपि प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1973

3) गोपाल राय-हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, छठा संस्करण, 2016

4) पुष्पपाल सिंह- 21 वीं शताब्दी का हिन्दी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012

5) प्रभा खेतान-भूमंडलीकरण-ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009

6) मधुरेश-हिन्दी उपन्यास का विकास, सुमित प्रकाशन, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, 2008

7) पुष्पपालसिंह-भूमंडलीकरण और हिन्दी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012

8) प्रदीप सौरभ-मुन्नी मोबाइल, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009

9) ममता कालिया-दुक्खम सुक्खम, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009

10) नमिता सिंह-लेडिज कलब, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011

11) गोविन्द मिश्र-कोहरे में कैद रंग, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 1999

12) गिरिराज किशोर-स्वर्णमृग-राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012

13) महीप सिंह-अभी शेष है, किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2004

14) रवीन्द्र वर्मा-दस बरस का भँवर-राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007

15) गीतांजलि श्री-तिरोहित, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007

16) चित्रा मुद्गल-गिलिगडू, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1999

17) दिनेश पाल-मेहरुन्निसा परवेज का कथा साहित्य: आदिवासी एवं मुस्लिम स्त्री, विकास प्रकाशन, कानपुर 2020

18) पंकज विष्ट-पंखावाली नाव, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009

19) मनीषा कुल श्रेष्ठ-शिगाफा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2010

20) अब्दुल विस्मिल्लाह- अपवित्र आख्यान, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008

21) अनामिका-दस द्वारे का पींजरा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007

22) अनामिका-तिनका तिनके पास, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008

23) अलका सरावगी-शेष कादम्बरी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2016

24) अलका सरावगी-कलिकथा बाया बाईपास, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002

25) अलका सरावगी-एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008

26) असगर वजाहत-कैसी आगी लगाई, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2004

27) उषा प्रियंवदा-भया कबीर उदास, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007

28) कमल नयन कावरा-भूमंडलीकरण के भँवर में भारत, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, 2012

29) कमलेश्वर-कितने पाकिस्तान, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2003

30) काशीनाथ सिंह-काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवाँ संस्करण, 2017

31) काशीनाथ सिंह-रेहन पर रग्धू, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पाँचवा संस्करण 2017

32) काशीनाथ सिंह-महुआ चरित, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012

33) कुणाल सिंह-आदिग्राम उपाख्यान, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 2010

34) गीतांजलि श्री-खाली जगह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2006

35) महुआ माजी-मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2010

36) महुआ माजी-महुआ चरित, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012

37) महुआ माजी-मैं बोरिशाइल्ला, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2006

38) मृदुला गर्ग-मिलजुल मन, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009

39) रजनी गुप्त-कुल जमा बीस, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012

40) रजनी गुप्त-एक न एक दिन, किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली

41) राजु शर्मा-विसर्जन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009

42) रामधारी सिंह दिनकर-अकाल संध्या, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 2004

43) रामशरण जोशी-इक्कीसवीं सदी के संकट, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008

44) शीला रोहेकर-मिस सैम्यूएल: एक यहूदी गाथा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली 2013

45) शैलेन्द्र सागर-एक सुबह यह भी, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012

46) रविन्द्र कालिया-ए० बी० सी० डी०, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2000

47) सच्चिदानंद सिन्हा-उपभोक्तावादी संस्कृति का जाल, रोशनाई प्रकाशन, पश्चिम बंगाल, 2012

48) फॉस-संजीव वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2015

49) अकबर, शाज़ी जमा-राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016

50) पां० बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा-चित्र, मुद्गल-सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016

51) कल्चर-वल्चर-ममता कालिया, किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2017

52) सौ साल पहले-सुजात-वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2017

53) सहेला रे-मृणाल पाण्डेय-राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2017

54) तीन ताल-संजय कुंदन-किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2017

55) जो दिखता नहीं-राजेन्द्र दानी-वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

56) हम यहाँ ये-मधु काँकारिया-किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2018

57) समय मेरे अनुरूप हुआ-चन्द्ररेखा ढड़वाल-अंतिका प्रकाशन, 2019

58) कुठाँव-अबदुल बिस्मिल्लाह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2019

59) कालीधार-महेश कटारे-अमरसत्य प्रकाशन, 2019

60) राजा जंगल और काला चाँद-तरुण भट्नागर-आधार प्रकाशन, 2019

61) अग्निलीक-हृषीकेश सुलभ-राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2019

62) विसात पर जुगनु-वन्दना राग-राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2021

63) आईनासाज़ अनामिका-राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2021

64) कुलभूषण का नाम दर्ज-अलका सरावगी-वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली-2021

शोध निर्देशक

डॉ० आनन्द प्रकाश गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

अनुसंधायिका

अनुराधा कुमारी
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा
पैट क्रमांक- 22090055